

डॉ. क्रेग कीनर, रोमन्स, व्याख्यान 11, रोमियों 9:17-11:32

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 9:17-11:32 पर सत्र 11 है।

पॉल पूर्वनियति के बारे में बात कर रहा है, और जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैं यह कैसे काम करता है इसके सभी लॉजिस्टिक्स में नहीं जाना चाहता।

ऐसी कुछ चीजें हैं जो शायद भगवान के मन का पता लगाने में मेरी बुद्धि से परे हैं, भले ही उसने हमें अपने दिव्य मन में कुछ अंतर्दृष्टि दी है, दोनों ने हमें धर्मग्रंथ में जो सिखाया है और जिस तरह से वह हमारे जीवन में अपनी आत्मा के साथ हमारे साथ काम करता है। और निःसंदेह, जो विहित है वही धर्मशास्त्र में है। लेकिन हम यहां जो देखते हैं, मुझे लगता है कि रोमियों 9 में हम सभी सहमत हो सकते हैं, ईश्वर संप्रभु है और ईश्वर पूर्वनिर्धारित करता है।

और इस पूर्वनियति का मुद्दा यह है कि यह अनुग्रह से है। यह ऐसा कुछ नहीं है जो हमने अपने जीवन में ईश्वर के प्रेम को प्राप्त करने के लिए किया हो। यह ऐसा कुछ नहीं है जो हमने इस लायक बनाया हो कि ईश्वर ने हमें अपनी ओर मोड़ लिया हो।

यह सिर्फ भगवान हम तक पहुंच रहा है। और यह मेरे जीवन में निश्चित रूप से सच है। हम यहां यह भी देखते हैं कि आयत 17 में परमेश्वर ने फिरौन को इस रूप में खड़ा किया जिसे वह कुछ आयतों के बाद क्रोध का पात्र कहने जा रहा है।

भगवान कहते हैं कि मैंने तुम्हें इसी उद्देश्य के लिए बड़ा किया है। खैर, भगवान ने इस विशेष फिरौन को क्यों खड़ा किया? वह एक फिरौन चाहता था जो उसकी इच्छा का विरोध करे ताकि वह मिस्र देश में अपने चिन्ह और चमत्कार दिखा सके। और वास्तव में इसमें कुछ दया भी है, निर्गमन 9:15 के संदर्भ में, जिसे यहां रोमियों 9:17 में उद्धृत किया गया है। इस संदर्भ में कुछ दया है क्योंकि भगवान कहते हैं, मैं तुम्हें मिटा सकता था।

मैं तुझे और तेरे साथ तेरी प्रजा को भी नष्ट कर सकता था, परन्तु मैं ने तुझे इसी प्रयोजन से खड़ा किया, और इसी प्रयोजन से तुझे स्थिर किया, कि तुझ में अपना तेज दिखाऊं। इसलिए, निर्गमन 9:16 में, इसके बजाय परमेश्वर ने परमेश्वर की शक्ति को प्रकट करने के लिए फिरौन की स्थापना की। और जैसा कि पौलुस 9:17 में कहता है ताकि परमेश्वर का नाम सारी पृथ्वी पर घोषित किया जा सके।

निर्गमन, निर्गमन 7.5, निर्गमन 7:17, इत्यादि में आपके पास यह बार-बार है। परमेश्वर ऐसा इसलिये कर रहा है कि मिस्रवासी जान लें कि मैं यहोवा हूं। बाद में, वह चीजें करता है, ठीक है,

और वास्तव में वह पहले से ही कुछ चीजें कर चुका है, लेकिन निर्णय के संदर्भ में भी, भगवान चीजें करता है ताकि इस्राएली जान सकें कि मैं भगवान हूँ।

परमेश्वर चाहता है कि उसका नाम सारी पृथ्वी पर घोषित किया जाए। पॉल ऐसा कहते हैं। ईश्वर की शक्ति को प्रकट करने के बारे में बात करने वाले निर्गमन का तात्पर्य भी यही है।

और यह कुछ ऐसा है जो सिर्फ यहीं के लिए नहीं है। यह कुछ ऐसा है जिसकी पॉल रोमियों में अन्यत्र परवाह करता है। रोमियों 1 :5 को याद रखें, पॉल का मिशन अन्यजातियों के बीच परमेश्वर के नाम के लिए, परमेश्वर के नाम के सम्मान के लिए विश्वास की आज्ञाकारिता लाना था।

खैर, यहाँ भी, परमेश्वर ने अपने नाम के सम्मान के लिए कार्य किया है। उनके नाम के सम्मान का क्या मतलब? ताकि अन्यजातियों में उसका प्रचार हो, और लोग जान लें कि वह कौन है। वह 9:24 के संदर्भ में आगे बढ़ता है ताकि वह अपने लिए न केवल यहूदियों से, बल्कि अन्यजातियों से भी लोगों को ला सके।

चाहे वह मिस्रवासी हों या 1 शमूएल में, उसने इस तरह से कार्य किया ताकि पलिश्टी, जो पहले से ही जानते थे कि उसने मिस्रियों के बीच क्या किया था, जान सकें कि वह परमेश्वर था। 1 शमूएल 4 और 5 में इस्राएली सन्दूक को लगभग एक जादुई चीज़ मानते हैं जो उनकी रक्षा करेगी। सन्दूक, इसे यहाँ लाओ, यह हमें बचाएगा।

और यह उन्हें बचाता नहीं है। होप्पी और पीनहास पाप में जी रहे हैं या पाप में जी रहे हैं और इस्राएल पर न्याय आता है। और फिर अध्याय 5 में, पलिश्टियों ने उस सन्दूक को अलग कर दिया जिस पर उन्होंने कब्ज़ा कर लिया है।

वे सभी इसे लेकर उत्साहित हैं। और वे अपने भगवान को उसके चेहरे पर गिरा हुआ पाते हैं। वे सन्दूक के साम्हने उसके मुँह पर गिर पड़े हैं।

खैर, वे नहीं जानते कि इसमें ग़लत क्या है। तो, उन्होंने बस भगवान को वापस स्थापित कर दिया। अगले दिन वह मुँह के बल गिरा, उसका सिर और हाथ उसी तरह काट दिए गए जैसे आप अपने पकड़े गए दुश्मनों को पाते हैं।

आपने कितने लोगों को मारा है यह गिनने के लिए आप हाथ काट सकते हैं या डेविड शरीर के किसी अन्य अंग के साथ ऐसा करता है। तो, यहाँ डैगन परमेश्वर के सामने औंधे मुँह गिर गया, और वास्तव में एक पराजित शत्रु की तरह, परमेश्वर के सामने औंधे मुँह गिर गया। और वे कहते हैं, ठीक है, ठीक है, और इस बीच, भगवान लोगों को ट्यूमर से मार रहा है।

और आखिरकार उन्होंने जहाज़ वापस भेजने का निर्णय लिया। परमेश्वर उस मामले में काम कर रहा था, न केवल सन्दूक को इस्राएल को वापस लाने के लिए, जो वह था, बल्कि इसलिए भी कि पलिश्टियों को पता चले कि वह भगवान था। परमेश्वर को पहले से ही अन्यजातियों की परवाह थी।

अब्राहम के वंश में, पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीर्वाद दिया जाना था क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों को अपने उद्देश्य दिखाना चाहता था और चाहता था कि वे उसकी महिमा करें क्योंकि उसी में हमारा जीवन है। यिर्मयाह के शब्दों में, तुम अपने लिए कुंड, पानी की टंकियाँ, टूटे हुए पानी के टैंक बनाते हो जिनमें पानी नहीं समा सकता। तू ने मुझ जीवित जल के सोते को अस्वीकार कर दिया है।

या होशे में, तुम मेरे विरुद्ध हो, अपनी सहायता के विरुद्ध हो। भगवान हमारे लिए सबसे अच्छी चीज़ है। ईश्वर हमारे सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हैं और ईश्वर की महिमा और हमारे सर्वोत्तम हित आम तौर पर मेल खाते हैं।

लेकिन किसी भी मामले में, हमें परमेश्वर की महिमा के लिए भी उत्साह रखना चाहिए। ईश्वर दया करता है और जिसे चाहता है उसे कठोर बना देता है, 9:18. खैर, यह निर्गमन 33:19 की भाषा का उपयोग कर रहा है। आयत 15 में, परमेश्वर ने मूसा से बात की और कह रहा था, मैं उस पर दया करूंगा।

मुझमें दया है. खैर, यह मूसा को यह बताने के संदर्भ में था कि वह जा रहा है, निश्चित रूप से मूसा वह व्यक्ति था जिस पर उसे दया आएगी। वह उसे अपनी महिमा दिखाएगा, परन्तु वह उन लोगों को दण्ड देगा जिन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी।

और यहाँ हम यह भी पढ़ते हैं कि ईश्वर फिरौन को कैसे कठोर बनाता है। निर्गमन 9:12, निर्गमन 10:27, निर्गमन 11:10, परमेश्वर ने फिरौन को कठोर कर दिया। अब हम निर्गमन 8:15 और 32 से भी जानते हैं, फिरौन ने अपना हृदय कठोर कर लिया, लेकिन यहाँ पॉल की बात नहीं है।

पॉल ईश्वर की संप्रभुता की ओर इशारा कर रहा है और यह वास्तव में मानव की स्वतंत्र इच्छा या मानवीय विकल्पों के साथ कैसे काम करता है। आप जानते हैं कि वह शमूएल से कैसे कह सकता है, मैं कल किसी को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ और तुम उसका इस्राएल पर राजा के रूप में अभिषेक करना। और जहाँ तक शाऊल जानता है, उसे कहीं नहीं भेजा जा रहा है।

वह अपने खोए हुए गधों की तलाश में निकला है। और उसका जवान उसके साथ है और कहता है, तू इन खोए हुए गधों को ढूँढ़ रहा है। खैर, वास्तव में एक भविष्यवक्ता है जो शायद हमें इसके बारे में बता सकता है।

इस शहर में एक द्रष्टा, भगवान का एक आदमी है, और वह हमें बता सकता है कि उन खोए हुए गधों को कहाँ पाया जाए। उसे इस बात का एहसास नहीं है कि उसे भेजा जा रहा है, लेकिन ईश्वर मानवीय विकल्पों आदि की घटनाओं के माध्यम से कार्य करने में संप्रभु है। हमें इसमें सामंजस्य नहीं बिठाना है।

हम बस यह मान सकते हैं कि जैसा कि इज़राइल ने शुरू से ही माना था, ईश्वर संप्रभु है और लोग अपनी पसंद के लिए जिम्मेदार हैं। यशायाह अध्याय 10 में परमेश्वर ने अशूरियों को खड़ा किया। वह कहता है कि मैंने अपने लोगों को दण्ड देने के लिए अशूरियों को अपने क्रोध की छड़ी के रूप में खड़ा किया।

लेकिन जब उनका काम पूरा हो जाएगा, तो मैं उन्हें उनके अहंकार के लिए दंडित करने जा रहा हूँ। वे स्वयं को परमेश्वर की छड़ी के रूप में नहीं देखते थे। खैर, इस सब में भगवान काम कर रहा है।

भगवान दया दिखाते हैं। ईश्वर जैसा चाहता है वैसा कठोर कर देता है। परमेश्वर के उद्देश्य का विरोध कौन कर सकता है? श्लोक 19.

खैर, जो प्रभु के विरुद्ध खड़ा हो सकता है उसकी यह भाषा अक्सर पुराने नियम में ईश्वर की स्तुति के रूप में उपयोग की जाती थी, जैसे 2 इतिहास 20 श्लोक 6, दानियेल 4:35 में। लेकिन यहां काल्पनिक वार्ताकार फिर से बोल रहा है। परमेश्वर के उद्देश्य का विरोध कौन कर सकता है? दूसरे शब्दों में, अरे, मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। यदि मैं परमेश्वर के विरुद्ध कार्य करता हूँ, तो मेरे पाप के लिए मुझे दोषी क्यों ठहराया जाए? ईश्वर संप्रभु है।

भगवान ने मुझसे यह करवाया। खैर, पाठ यह नहीं कह रहा है। परन्तु यह व्यक्ति, परमेश्वर के उद्देश्य का विरोध कौन कर सकता है? यह मेरी गलती नहीं है।

और इसलिए, पॉल की प्रतिक्रिया है, अरे, बल्कि अगर ईश्वर संप्रभु है, तो आप उससे सवाल करने वाले कौन होते हैं? और वह पूरे पुराने नियम में ईश्वर के न्याय और संप्रभुता के बारे में ग्रंथों का उदाहरण देता है। श्लोक 20 और 21 में, वह इस भाषा का उपयोग करता है, और इसके समान कुछ अन्य पाठ भी हैं, यिर्मयाह 18 और इसी तरह। लेकिन विशेष रूप से ये दो ग्रंथ, इन दोनों ग्रंथों का ग्रीक अनुवाद, यशायाह 29.16, क्या कुम्हार को मिट्टी के समान माना जाएगा? क्या जो बनाया गया है वह अपने निर्माता से कहेगा, ओह, तुमने मुझे ठीक नहीं बनाया? या यशायाह 45.9, क्या तुम उस से नहीं लड़ोगे जो तुम्हें गढ़ता है? क्या मिट्टी अपने गढ़ने वाले से कहती है, अरे, क्या बना रहे हो? दरअसल, शायद उस तरह से नहीं रखा गया है।

आप क्या बना रहे हैं? आपको क्या लगता है कि आप क्या कर रहे हैं? आपको इस जार के लिए हैंडल बनाना चाहिए था। मिट्टी ऐसा नहीं कर सकती और हमें भी ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि हम यह स्वीकार कर रहे हैं कि ईश्वर संप्रभु है, यदि आप यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि ईश्वर संप्रभु है, तो ठीक है, आप अपने पाप के लिए जिम्मेदार हैं।

किसी भी तरह, आपको शिकायत नहीं करनी चाहिए, है ना? तो, रोमियों 9:22, परमेश्वर क्रोध के इन पात्रों को सह लेता है, इन पात्रों को दया के पात्रों के निमित्त वह अपना न्यायदंड देगा। मानव इतिहास क्यों चलता है? भगवान दुखों को क्यों जारी रहने देते हैं? खैर, जब वह कष्टों को जारी रखना समाप्त कर देगा, जब वह दुनिया में पूर्ण न्याय लाएगा, ऐसा करने के लिए, उसे दुनिया का न्याय करना होगा। और अब कुछ लोग जो सबसे ज़ोर से शिकायत करते हैं कि ईश्वर का न्याय कहाँ है, उन लोगों में से हैं जिनका न्याय उस न्याय के द्वारा किया जाएगा।

लेकिन साथ ही, एक बार जब ईश्वर इसका अंत कर देता है, तो यह लोगों के लिए दया का पात्र बनने का अवसर भी समाप्त कर देता है। इसलिए, परमेश्वर उन लोगों के लिए इतिहास को खेलने

देता है जो हमेशा के लिए उसके लोग होंगे, हमारे लिए, जैसे परमेश्वर ने खुद को प्रकट करने के लिए फिरौन को सहन किया। अध्याय 9, श्लोक 25 और 26।

यहाँ पॉल ने होशे 2:23 और फिर होशे 1:10 को उद्धृत किया है। जो लोग उसके लोग नहीं हैं वे उसके लोग बन जायेंगे। यह होशे की तरह है, मुझे लगता है कि अपने बच्चों का नाम इस तरह रखना वास्तव में कठिन होगा, लेकिन इस पीढ़ी में, यशायाह भी ऐसा कर रहा था, अपने बच्चों को इज़राइल के संकेत के रूप में विशेष नाम दे रहा था। ठीक है, गोमेर द्वारा होशे के बच्चे, जो एक वेश्या थी, वास्तव में यह स्पष्ट नहीं है कि वे सभी उसके थे, लेकिन किसी भी मामले में, उसने बच्चों का नाम लो अमी रखा, मेरे लोग नहीं, और लो रूहामा, प्यार नहीं किया, दया नहीं की पर।

मेरा मतलब है, आप अपनी बेटी का नाम बिना प्यार के रखने को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं? लेकिन फिर बाद में, जिन्हें लो अमी कहा जाता था, मेरे लोग नहीं, वे अमी, मेरे लोग होंगे, और लो रूहामा, रहामा होंगे, प्रिय। भगवान की दया होगी. और इसलिए, पॉल होशे के ग्रंथों को उद्धृत करता है।

संदर्भ में, मुद्दा यह है कि भगवान अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेंगे। जब वह उन्हें उनके पाप के लिए अस्वीकार कर देगा, तो वे उसके पास वापस आएंगे। वह उन्हें पुनर्स्थापित करेगा।

यह होशे 1:9 के समान है। ठीक है, यदि परमेश्वर इस्राएल को अपनी प्रजा के रूप में अस्वीकार किए जाने के बाद उसे अपनी प्रजा बना सकता है, तो निश्चित रूप से परमेश्वर अन्यजातियों को भी अपनी प्रजा बना सकता है, जो उसकी प्रजा नहीं थीं। और इसलिए, पॉल ने उस भाषा को यहां रोमियों 9 में बहुत प्रासंगिक रूप से लागू किया है। और, आप जानते हैं, पॉल अन्य पाठों का भी उपयोग कर सकता था। यह पॉल का आविष्कार नहीं है।

यशायाह 2, 2, और 3 को देखें, जहां सिय्योन से कानून निकलते समय बहुत से लोग सिय्योन में आएंगे। या यशायाह अध्याय 19 और पद 21, मिस्रवासी प्रभु को जान लेंगे। और पद 25 में, मेरी प्रजा के लिये मिस्र, और मेरी बनाई हुई अश्वर, और मेरा निज भाग इस्राएल धन्य हो, कि परमेश्वर पृथ्वी की बहुत सी जातियों के बीच में अपने लिये जातियां बनाए।

56:6 से 8 तक यशायाह में, जहां परदेशी यहोवा से मिल जाएंगे, और मैं उन्हें अपने पवित्र पर्वत पर ले आऊंगा, और वह सब देशों के लोगों के लिखे प्रार्थना का भवन होगा। यीशु ने मरकुस अध्याय 11, श्लोक 17 में उद्धृत किया है। जकर्याह अध्याय 2 और श्लोक 11 में, कई राष्ट्र प्रभु से जुड़ जाएंगे और मेरे लोग बन जाएंगे।

तो, आप जानते हैं, यह राष्ट्रों पर न्याय की भी बात करता है। राष्ट्रों में से हर कोई प्रभु की सेवा नहीं करेगा, परन्तु परमेश्वर का वचन राष्ट्रों में फैल जाएगा। और वह पुराने नियम के कुछ अंशों में भी था।

रोमन अध्याय 9, छंद 27 और 28। और यहां मैं 2016 में आने वाले सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अध्ययन बाइबिल से उद्धृत कर रहा हूं। मैंने अधिकांश न्यू टेस्टामेंट नोट्स लिखे हैं।

यहूदी शिक्षक अक्सर ग्रंथों को एक सामान्य वाक्यांश से जोड़ते थे। हम पहले ही उस गेजर शब्द के बारे में बात कर चुके हैं। पॉल निस्संदेह जानता है कि होशे 1.10 में इज़राइल, जिस पाठ को उसने अभी 9:26 में उद्धृत किया है, वह समुद्र के किनारे की रेत की तरह है, होशे 1.10, जो यहां यशायाह 10:22 से 23 के साथ उसके लिंक को सुविधाजनक बनाता है, जहां वह भी बात करने जा रहा है समुद्र तट पर रेत के बारे में, यहाँ रोमियों 9:27 और 28 में उद्धृत किया गया है।

पॉल ने दो ग्रंथों के कुछ शब्दों को मिश्रित किया जो उसके समय में एक आम प्रथा थी। यशायाह 10:22 और 23 में, परमेश्वर अपने ही लोगों को दण्ड देता है, केवल बचे हुए लोगों को बख्शाता है। फिर हम रोमियों 9 के पद 29 पर आते हैं, जो यशायाह का एक और अवशेष पाठ है।

वह यशायाह 1:9 से उद्धरण देने जा रहा है, जहां इस्राएल के केवल कुछ लोग ही न्याय से बच पाते हैं। और पद 10 इस्राएल को सदोम और अमोरा कहता है। यह वास्तव में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के लेखन में काफी सामान्य है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु कहते हैं, हे कफरनहूम, तुम पर हाय। तुम पर धिक्कार है, चोराज़िन। न्याय के दिन सदोम और अमोरा तुमसे बेहतर होंगे।

मैथ्यू 11 और ल्यूक 10, लेकिन मैं मैथ्यू 10 में भी सोच रहा था, वह अन्य स्थानों पर सदोम और अमोरा के साथ भी तुलना करता है। लेकिन यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में भी पहले से ही मौजूद है। तो, मुद्दा यह है कि, ईश्वर जातीय पक्षपात के बिना सभी लोगों का समान रूप से न्याय करता है।

परमेश्वर चाहता है कि हर कोई खुशखबरी सुने। और क्योंकि पॉल रोमियों 11 में इस पर जोर देता रहता है, उसे वापस आना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि आप इस बिंदु को न चूकें कि भगवान को इज़राइल के लिए एक विशेष प्रेम है। वह बार-बार वापस आता रहता है, ठीक वैसे ही जैसे हमें बात को सही ठहराते रहना है क्योंकि लोग हमें गलत तरीके से सुन सकते हैं।

पॉल, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप इसे गलत तरीके से न लें, वापस आते रहे और कुछ बिंदुओं को अर्हता प्राप्त करते रहे, जैसा कि इतिहास में अक्सर लोगों ने किया है। रोमियों अध्याय 9, श्लोक 30 से 32 तक, अन्यजातियों ने धार्मिकता का पीछा नहीं किया, लेकिन फिर उन्होंने विश्वास से इसे समझ लिया। श्लोक 30, इस्राएल ने धार्मिकता के नियम का पालन किया, परन्तु उस तक नहीं पहुंच सका।

श्लोक 31, क्योंकि इस्राएल ने विश्वास के बजाय कर्मों से इसका पालन किया। श्लोक 32, और हम अध्याय 10, श्लोक एक से तीन में इसके बारे में अधिक बात करेंगे। यदि आप ईश्वर के समक्ष अपने लिए सही स्थिति अर्जित करने, अपने आप को बेहतर, किसी और से बेहतर बनाने, या सिर्फ आत्म-सुधार के साधन के रूप में कानून का अनुसरण करते हैं, यदि यह सब कुछ है, तो आप कानून का अनुसरण कर रहे हैं कार्यों का दृष्टिकोण।

पॉल चाहता है कि हम विश्वास के दृष्टिकोण से धर्मग्रंथों के कानून का अनुसरण करें। अब, यहूदी लोग, फिर से, आम तौर पर मानते थे कि उन्हें इब्राहीम में चुना गया था। वे मोक्ष के लिए चुने गए लोग थे।

लेकिन पॉल कह रहा है, आपको आपकी जातीयता के आधार पर नहीं चुना गया है, आपको मसीह के आधार पर चुना गया है। और इसलिए, उन्होंने यह भी विश्वास किया कि वे अनुग्रह द्वारा बचाए गए थे। वे अनुग्रह से वाचा का हिस्सा हैं।

लेकिन एक बार जब आप अनुबंध में शामिल हो जाते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ लोग दूसरों से बेहतर नहीं हो सकते। कुछ लोग दूसरों को नीचा नहीं देख सकते। और लोग दूसरों को हेय दृष्टि से देखते थे।

आपके द्वारा पढ़े गए कुछ अंशों से आप शायद ऐसा न सोचें। मृत सागर स्कॉल में, निश्चित रूप से, जिन लोगों ने इनमें से कुछ भजन लिखे थे वे परमेश्वर के सामने खुद को विनम्र कर रहे थे। लेकिन फिर आपने पढ़ा कि उन्होंने उन बाहरी लोगों के बारे में क्या कहा जो उनके समुदाय का हिस्सा नहीं थे।

वे सभी शापित थे। कुमरान भजनों में से एक में, यह शेष इज़राइल को बेलियल समुदाय, शैतान के समुदाय के रूप में बताता है। तो, मेरा मतलब है, यह काफी सशक्त भाषा है।

आप यह नहीं कह सकते कि यह यहूदी-विरोधी है। यह एक यहूदी दस्तावेज़ है। लेकिन निश्चित रूप से, कुछ यहूदी समूहों को कुछ अन्य यहूदी समूह पसंद नहीं थे।

और फरीसी गंभीरता से धर्मपरायणता में विश्वास करते थे। लेकिन जब आप देखते हैं कि वे, बाद के स्रोतों में, रब्बी कैसे उतरे, विशेष रूप से फरीसी शिक्षकों से, उन्होंने एम हारेल्ज़ को कैसे देखा, आम लोग जो कानून को नहीं जानते थे और कानून को उतना अच्छी तरह से नहीं समझते थे जितना उन्हें समझना चाहिए। आपके पास ऐसे ईसाई भी हैं, जो उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में बड़े भाई की तरह व्यवहार करते हैं, लेकिन मुद्दा भूल जाते हैं।

हम किसी को नीची दृष्टि से नहीं देख सकते क्योंकि हम सभी अनुग्रह द्वारा बचाए गए हैं। हम उन लोगों को हेय दृष्टि से नहीं देख सकते जो परिवर्तित नहीं हुए हैं जैसे कि हम बेहतर हैं। हम बेहतर नहीं हैं क्योंकि हम उनसे अधिक योग्य हैं।

हम भगवान की कृपा से बचाए गए हैं और वे भी भगवान की कृपा से बचाए जा सकते हैं। और भगवान ने हममें से कुछ को इससे बचाया, आप जानते हैं, यदि आप युवावस्था में परिवर्तित हो गए, तो इसके लिए भगवान की स्तुति करो, और भी बेहतर। लेकिन हममें से कुछ, ठीक है, हममें से कुछ अपनी अपेक्षा से कम उम्र में परिवर्तित हो गए।

हम इसके लिए भी भगवान की स्तुति करते हैं। लेकिन हम सभी जब भी बचाए जाते हैं और चाहे जिससे भी बचाए जाते हैं, भगवान की कृपा पर निर्भर होते हैं। इज़राइल ने इसे विश्वास के बजाय कार्यों से आगे बढ़ाया।

और इसलिए, फिर से, हम कानून के विपरीत दृष्टिकोण सुनते हैं, जैसा कि अध्याय 3, श्लोक 27 में, किस कानून द्वारा? कार्यों के नियम से? नहीं, लेकिन आस्था के नियम के अनुसार। और इसे अध्याय 10, छंद 5 से 10 में और विकसित किया गया है, जिस पर मैं अध्याय 10 के पहले भाग की तुलना में अधिक समय बिताने जा रहा हूं। खैर, चूंकि मैं ऐसा करने जा रहा हूं, तो खत्म करने से पहले मैं इसका उल्लेख कर दूँ अध्याय 9 कि विद्वानों ने अध्याय 10, श्लोक 4, टेलोस के बारे में बहस की है कि क्या कानून के अंत का मतलब है कि कानून का अंत हो गया है, या इसका मतलब सिर्फ यह है कि यह कानून का लक्ष्य है।

और मैं हमेशा कहता था कि यह कानून का लक्ष्य है। और फिर संदर्भ में, यह मेरे दिमाग में आया, शायद यह वास्तव में कानून का अंत कह रहा है, लेकिन इस उद्देश्य के लिए कानून का अंत, आत्म-औचित्य के लिए, जिसे शुरू करने के लिए कानून का उद्देश्य कभी नहीं था, लेकिन बस में लोग इसका उपयोग कैसे करेंगे इसकी शर्तें। लेकिन इस शब्द का अर्थ कानून का लक्ष्य हो सकता है।

तो, किसी भी मामले में, अंततः कानून जिस ओर इशारा करता है वह यीशु मसीह ही है। और यह 3:31 में स्पष्ट रूप से सत्य है। तो 10:4 में इसका यही अर्थ हो सकता है। लेकिन अगर इसका मतलब अंत है, तो इसका मतलब है कानून का अंत, इसे एक निश्चित तरीके से उपयोग करने की कोशिश करना।

आप इससे बच नहीं सकते, हालाँकि ऐसा शुरू करने का इरादा कभी नहीं था। अध्याय 9, श्लोक 33, वह ग्रंथों को फिर से मिश्रित करता है। वह काम करने का एक सामान्य तरीका था।

वह सामान्य कुंजी शब्द जिसके माध्यम से वह यशायाह में इन दो ग्रंथों को मिश्रित करता है वह पत्थर शब्द है। यशायाह 8.14, इस्राएल परमेश्वर के सामने पत्थर की नाईं ठोकर खाता है। यशायाह 28.16, जो भी भरोसा करता है, और हां, यशायाह के ग्रीक अनुवाद में, यह पिस्टून है, जो भी भरोसा करता है, जो आधारशिला, आधारशिला जो भगवान रखता है उस पर विश्वास करता है, वह जल्दबाजी या घबराहट नहीं करेगा या ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजेंट में नहीं होगा, शर्म नहीं आएगी।

और यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ होने जा रहा है क्योंकि पॉल इसे बाद में अध्याय 10 और श्लोक 11 में लेने जा रहा है, जो कोई भी भगवान के नाम से पुकारेगा, हाँ, वह श्लोक 13 है, जो कोई प्रभु के नाम से पुकारेगा। सुरक्षित रहो। पद 11 में, जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा। जो कोई जिस चीज़ पर विश्वास करता है उसे पहले से ही पत्थर के रूप में उद्धृत किया गया है।

खैर, पत्थर आधारशिला है। और इसलिए, जो कोई पाठों को जोड़ रहा है वह भजन 118, श्लोक 22 के बारे में सोच सकता है, जिसे यीशु ने मार्क अध्याय 12 और श्लोक 10 में उद्धृत किया था। यीशु ने उद्धृत किया कि यरूशलेम में फसह के मौसम में जब फसह तीर्थयात्री आ रहे थे और भजन 113 से 118 तक, हालेल, उनके दिमाग में ताजा थे।

और यीशु उस पत्थर के बारे में बात करते हैं जिसे राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया था। मैथ्यू अध्याय 21 में, वास्तव में, पत्थर के संबंध में, वह कुछ अन्य ग्रंथों को एक साथ जोड़ता है जहां आप पत्थर पर गिर सकते हैं और टूट सकते हैं, या पत्थर आपके ऊपर आ सकता है और आपको कुचल सकता है। कुचलने का पत्थर, उन लोगों के लिए निर्णय का पत्थर जो विश्वास नहीं करते और सही तरीके से प्रतिक्रिया नहीं देते।

और यह डैनियल अध्याय 2 की ओर एक संकेत है, श्लोक 44 में कहीं, वह मूर्ति में विभिन्न राज्यों के बारे में कुछ कहता है। और फिर अंततः, यह ईश्वर का राज्य है, जो एक बड़े पत्थर की तरह आता है और अन्य राज्यों को कुचल देता है। और सबसे पहले पीटर भी इन ग्रंथों को एक साथ जोड़ता है।

हमारे पास इन पाठों को इन विशेष पाठों में अलग-अलग अनुच्छेदों में एक साथ क्यों जोड़ा गया है? मेरी सोच इसलिए है क्योंकि लोग जानते थे कि यीशु ने इसे इसी तरह सिखाया था। और इसलिए, वे इन पाषाण ग्रंथों का उपयोग करने के लिए तैयार थे। पॉल अन्यत्र भी ईसा मसीह को अपना दिव्य पत्थर बताते हैं।

1 कुरिन्थियों अध्याय 10 और श्लोक 4 में, जहाँ मसीह जंगल में चट्टान, पानी का स्रोत है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 में, ईश्वर इस्राएल की चट्टान है। तो, इनमें से बहुत सारे कनेक्शन बनाए जा सकते थे।

पॉल ने यहां उनमें से दो का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है, लेकिन यह तथ्य कि उसका एक पाठ आधारशिला पाठ है, संभवतः यह दर्शाता है कि यीशु ने आधारशिला के बारे में भी क्या सिखाया था। रोमियों अध्याय 10, श्लोक 5 से 10 तक चलते हुए। आप जानते हैं, हमें कानून को अनुग्रह के संदेश के रूप में देखना चाहिए, अगर हम इसे सही तरीके से समझते हैं।

उसी प्रकार जब परमेश्वर ने 10 आज्ञाएँ दीं, तो उसने 10 आज्ञाएँ, निर्गमन अध्याय 20, यह कहकर प्रस्तुत कीं, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें बलवन्त भुजा के द्वारा मिस्र से निकाल लाया। दूसरे शब्दों में, इससे पहले कि वह उन्हें आज्ञा दे, इससे पहले कि वह उन्हें बताए कि कैसे जीना है, वह उन्हें याद दिलाता है कि उसने उन्हें छुटकारा दिला दिया है। उसने उनका उद्धार किया है।

पॉल अध्याय 10 और पद 5, लैव्यव्यवस्था 18 और पद 5 में उद्धृत करता है, जो ये काम करते हैं वे उनके द्वारा जीवित रहेंगे। खैर, पॉल ने पहले ही तर्क दिया है कि हर किसी ने पाप किया है और इसलिए हम उनके अनुसार नहीं जीते हैं। बस शुरुआत करते हुए, लैव्यव्यवस्था 18 और पद 5, आप ये काम करते हैं, आप उस वाचा का पालन करते हैं जो आपके परमेश्वर यहोवा ने आपके साथ बनाई है, और आप, मेरे लोग, भूमि पर लंबे समय तक जीवित रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण में यह बात अक्सर कही जाती है, और यह लैव्यव्यवस्था 18:5 में दिखाई देती है। लेकिन रब्बियों ने इसे सादृश्य के माध्यम से या आज्ञाकारिता के माध्यम से अनन्त जीवन के लिए इससे प्राप्त होने वाली हर चीज़ को निचोड़ने के माध्यम से लागू किया। यदि तुम इन आज्ञाओं का

पालन करोगे, तो तुम सदैव जीवित रहोगे। परन्तु क्या उन्होंने इन सभी आज्ञाओं का पालन किया? खैर, वे स्वयं स्वीकार करेंगे कि उन्होंने इन सभी आज्ञाओं का पालन नहीं किया, लेकिन उन्होंने सोचा, अच्छा, भगवान बुरी चीजों को नजरअंदाज कर देंगे।

हम काफी अच्छे काम करते हैं, है ना? तो, पॉल सैद्धांतिक रूप से इसे काल्पनिक रूप से उपयोग कर सकता है, हाँ, या यह उसके विरोधियों का एक परिचित प्रमाण पाठ हो सकता है, उनके साथ सभाओं में बहस करने से, कि वे इसे उठाना पसंद करते हैं और कहते हैं, ठीक है, देखो, अगर तुम ऐसा करते हो ये चीज़ें, आप इनके द्वारा जिंएंगे। और हम इन आज्ञाओं का पालन करते हैं, अन्यजाति नहीं करते। लेकिन अध्याय 10, छंद 6 से 10 में, पॉल वही करता है जो एक अच्छा रब्बी तब करता है जब कोई प्रमाण पाठ उद्धृत करता है, आप एक काउंटर पाठ उद्धृत करते हैं।

अध्याय 10, श्लोक 6 से 10 में, वह व्यवस्थाविवरण 30, श्लोक 12 से 14 पर एक मिड्रैश करता है। वह व्यवस्थाविवरण में इस मार्ग के आधार पर उपमाएँ बनाता है ताकि वह इसे समकालीन स्थिति पर लागू कर सके। वह स्वर्ग में चढ़ने की बात करता है।

वह कहते हैं कि हम इसके लिए स्वर्ग में नहीं चढ़ते। यहूदी परंपरा में, मूसा टोरा प्राप्त करने के लिए न केवल सिनाई पर चढ़े, जैसा कि तनाख में, जैसा कि पुराने नियम के ग्रंथों में है, बल्कि टोरा को स्वर्ग से नीचे लाने के लिए पूरे स्वर्ग पर चढ़े। और इसलिए, जैसा कि पॉल टोरा के साथ ये समानताएँ बनाने जा रहा है, ध्यान रखें कि यहूदी परंपरा में, यह और भी आगे चला गया, लेकिन यह उसकी तुलना के लिए अच्छा काम करता है।

वह गहराई में उतरने के बारे में बात करने जा रहा है, जिससे उसका तात्पर्य समुद्र पार करने से है। शाब्दिक रूप से, व्यवस्थाविवरण में, समुद्र के बारे में बात की गई है, जब योम सूफ़, समुद्र अलग हो गया, और इज़राइल उस स्थान पर उतर आया। लेकिन पॉल ने गहरे या रसातल में उतरने के लिए शब्दों को अपनाया, क्योंकि यह यीशु के मरने के लिए बेहतर संबंध बनाएगा।

तो, हम यहाँ व्यवस्थाविवरण 30 और पॉल द्वारा रोमियों 10 में इसे लागू करने के बीच समानताएँ देख सकते हैं। व्यवस्थाविवरण 30 में, यह मत कहिए कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? खैर, व्यवस्थाविवरण 30 में यह नहीं कहा गया है कि कौन स्वर्ग पर चढ़ेगा या कौन भगवान के उपहार टोरा को नीचे लाने के लिए चढ़ेगा। भगवान ने तुम्हें वह पहले ही दे दिया है। पौलुस कहता है, यह मत कह, कि परमेश्वर के उपहार मसीह को उतारने के लिये स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? आयत 6 में, व्यवस्थाविवरण 30 में टोरा कहता है, यह मत कहो, गहरे में कौन उतरेगा? अर्थात् समुद्र पार करके पुनः मुक्ति का अनुभव करना।

परमेश्वर ने तुम्हें पहले ही छुड़ा लिया है। उसी प्रकार, पौलुस कहता है, यह मत कह, कि मसीह को मरे हुए में से जिलाकर फिर से उद्धार का अनुभव करने के लिये अथाह कुंड में कौन उतरेगा? वह एक स्थान पर मोक्ष के बीच एक सादृश्य बना रहा है, जिस तरह से भगवान ने अपने लोगों, इज़राइल को बचाया, और जिस तरह से भगवान अब पहली वाचा के बीच बचाते हैं, ठीक

है, यह वास्तव में पहली वाचा, पुरानी वाचा और नई वाचा नहीं थी। और मूसा कहते हैं, वचन तुम्हारे निकट है।

अच्छा, वह कौन सा शब्द था जो आपके पास था? व्यवस्थाविवरण के संदर्भ में, यह टोरा था। परन्तु पौलुस कहता है कि वचन तुम्हारे निकट है। और पॉल इसे अपने समय के उस शब्द पर लागू करता है जिसका वह प्रचार कर रहा है, प्रेरितिक संदेश, विश्वास का संदेश जिसका हम अब प्रचार करते हैं, पद 8। शब्द आपके निकट है, व्यवस्थाविवरण कहता है, यह आपके मुँह में है और आपके हृदय में है।

और व्यवस्थाविवरण के संदर्भ में, इसका संबंध संभवतः टोरा को नियमित रूप से पढ़ने से है, जब आप उठते हैं और जब आप लेटते हैं, और मैं हर समय कहने का तरीका देखता हूँ, जब आप रास्ते में होते हैं और जब आप' आप घर पर हैं, और मैं यह कहने का तरीका देखता हूँ कि आप जहां भी हों, नियमित रूप से भगवान के वचन के बारे में बोलते रहें। लेकिन पॉल के लिए, वह इसे अपने समय में वचन पर लागू कर रहा है, विश्वास का यह संदेश, मसीह की खुशखबरी का संदेश, जिसका वह प्रचार करता है। यह संदेश आपके मुँह में है, और यह आपके दिल में है।

यह आपके मुँह में कैसा है? यदि तुम अपने मुँह से स्वीकार करते हो, कि यीशु प्रभु है, तो यह तुम्हारे हृदय में कैसा है? यदि आप अपने दिल में विश्वास करते हैं कि भगवान ने उसे मृतकों में से उठाया है, तो आप बच जायेंगे। आप जानते हैं, पॉल यहाँ मनमाने ढंग से केवल मुँह और हृदय का उल्लेख नहीं कर रहा है। जब मैंने बाइबिल की व्याख्या सिखाई है, तो मैं आमतौर पर उन छंदों से शुरुआत करता हूँ जिन्हें लोग संदर्भ से बाहर उद्धृत करते हैं।

और जब तक हम इस तक पहुंचते हैं, लोग वास्तव में घबरा जाते हैं। और मैं कहता हूँ, चिंता मत करो, यह मोक्ष की बात हो रही है। आप जानते हैं, तब आपने इसे सही तरीके से लागू किया था।

लेकिन पॉल इसे क्यों कह रहा है, इसे ठीक इसी तरह से व्यक्त कर रहा है? क्या वह कह रहा है, अच्छा, तुम्हें अपने मुँह से कबूल करना होगा? यदि आप बहरे और गूंगे हैं और आप अपने मुँह से कबूल नहीं कर सकते, तो क्या इसका मतलब यह है कि आप बचाए नहीं गए हैं? कदापि नहीं। यह पूरी तरह से मुद्दा गायब है। मुद्दा यह है, आप जानते हैं, वह मुँह, विश्वास की स्वीकारोक्ति का उल्लेख कर रहा है, उस धर्मग्रंथ के कारण जिसकी वह यहां व्याख्या कर रहा है।

और यह प्रभु का नाम पुकारने से भी जुड़ने जा रहा है। यदि आप अपने मुँह से बोलने में असमर्थ हैं, तो आप किसी अन्य तरीके, सांकेतिक भाषा या किसी अन्य तरीके से मसीह को कबूल कर सकते हैं। खैर, वह श्लोक 11 में आगे बढ़ता है।

हर कोई जो विश्वास करता है, और यहां वह यशायाह 28.16 से उद्धृत करता है, जैसा कि उसने हाल ही में किया था, रोमियों अध्याय नौ और श्लोक 33 में और अधिक पूरी तरह से। जो कोई भी उस आधारशिला में उस पर विश्वास करता है उसे शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा। और वह यहां ग्रीक अनुवाद का उपयोग कर रहा है।

आम तौर पर रब्बियों को जो भी अनुवाद सबसे उपयुक्त लगता था उसे मिश्रित और मिलान किया जाता था। लेकिन निश्चित रूप से, यह बाइबिल का सिद्धांत है। यह वास्तव में उस पाठ से परे है।

और किसी भी मामले में इसका यही निहितार्थ है। शर्मिदा नहीं होना पड़ेगा. और पॉल यहाँ पर युगान्तकारी शर्म, अंतिम दिन भगवान के सामने शर्म के संदर्भ में बात कर रहा है।

लज्जित न होंगे, क्योंकि हम उस पर विश्वास करते हैं। यह अध्याय 10 श्लोक 13 के समान है, केवल दो श्लोक बाद, जो कोई भी प्रभु के नाम से पुकारेगा वह बच जाएगा। तो हम बच जायेंगे.

हमें शर्मिदा नहीं होना पड़ेगा. अब वह हर किसी का उपयोग करता है क्योंकि यह श्लोक 13 के उस पाठ से जुड़ने जा रहा है जिसे वह उद्धृत करने जा रहा है। इसके अलावा, यह पद 12 में वह जो कहने जा रहा है उससे भी जुड़ता है।

यशायाह में, यह सिर्फ वह है जो विश्वास करता है, लेकिन यदि यह वह है जो विश्वास करता है, तो मूलतः यह वही है जो विश्वास करता है। इसलिए, पॉल ने शब्दों को फिर से अपनाया। यह एक परिचित तकनीक थी.

उस समय यह आमतौर पर लोगों द्वारा किया जाता था। और वास्तव में यह आजकल भी आम तौर पर किया जाता है। लेकिन किसी भी मामले में, वह श्लोक 12 में आगे बढ़ता है और हर किसी में इस जोर को जारी रखता है, वह बोलता है कि कैसे वह समग्र रूप से एक ही भगवान है।

उसने अभी-अभी यीशु को प्रभु बताया है। वह यहूदियों, यूनानियों और अन्यजातियों दोनों के लिए एक ही प्रभु है। वह हर किसी के लिए है.

पद 13, जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। यहां वह जोएल अध्याय दो के श्लोक 32 से उद्धरण दे रहा है, कम से कम हमारे अंग्रेजी संस्करण में। हिब्रू में, यह पहले से ही अध्याय तीन में है, लेकिन किसी भी स्थिति में, जो कोई भी प्रभु का नाम लेगा उसे बचाया जाएगा।

वह इसे श्लोक 11 में पहले के श्लोकों के साथ जोड़ते हैं। यह यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करने के संदर्भ में भी लागू होता है। पॉल जानता था कि वह अपने तर्क के साथ कहाँ जा रहा है।

अतः जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह बच जाएगा। एक बार मैं वास्तव में पूरी रात जागकर किसी के साथ बाइबल के बारे में बात कर रहा था। और फिर मैं अगली सुबह चर्च तक लगभग आठ मील पैदल चला।

मैं उन दिनों छोटा था. और फिर मैं घर जाकर झपकी लेने से पहले बस कुछ कर रहा था। और मैं यहोवा के कुछ गवाहों से मिला।

और उनमें से एक कह रहा था, अच्छा, तुम जानते हो, जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह बच जाएगा। और यह उसने मुझे रोमियों 10:13 में दिखाया। और उस ने कहा, तुम जानते हो, योएल

में, जो कोई यहोवा का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा। और मैंने कहा, ठीक है, हाँ, जोएल में, यह वह है जो नाम, नाम, दिव्य नाम से पुकारता है।

लेकिन देखिए कि पॉल इसे इस संदर्भ में यहां कैसे लागू करता है। दरअसल, मैं बहुत थक गया था. मेरा दिमाग बहुत थक गया था.

मैं बस यही प्रार्थना कर रहा था कि हे भगवान, कृपया मुझे सद्बुद्धि दे। और इस संदर्भ में यह सही था कि हम यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं। तो, मैंने उनसे कहा, आप देखिए, यदि आप विश्वास नहीं करते कि यीशु दिव्य हैं, तो आप वास्तव में मुक्ति के लिए प्रभु का नाम नहीं ले रहे हैं।

और वह नहीं जानता था कि क्या कहे। लेकिन मुझे लगता है कि यहां वह इसे उसी तरह लागू कर रहा है जैसे इसे प्रेरितों के काम अध्याय दो और श्लोक 21 में लागू किया गया है, कि आत्मा के उंडेले जाने का समय आ गया है, आपके बेटे और बेटियां भविष्यवाणी कर रहे हैं। इसलिए, उसी समय जिसके बारे में जोएल ने कहा था, यह मुक्ति का युग है, कि जो कोई प्रभु के नाम से पुकारेगा वह बच जाएगा।

खैर, भगवान के नाम से पुकारने का क्या मतलब है? और जैसे ही वह प्रेरितों के काम अध्याय दो में अपने संदेश को आगे बढ़ाता है, पीटर समझाता है कि जिस प्रभु के नाम से आपको पुकारना है, कुरियोस का नाम प्रभु के दाहिने हाथ पर बैठे प्रभु का नाम है। मेरा प्रभु प्रभु के दाहिनी ओर बैठा है, जो पुनर्जीवित भी है और जो परमेश्वर के हाथ में है। और इसलिए, श्लोक 38 और 39 में, वह उनसे पश्चाताप करने और यीशु के नाम पर बपतिस्मा लेने का आह्वान करता है।

दूसरे शब्दों में, प्रभु का नाम पुकारना, ठीक है, जिस प्रभु का नाम तुम्हें पुकारना है वह यीशु का नाम है। लेकिन यह काफी कट्टरपंथी था क्योंकि अधिकांश यहूदी लोग कहेंगे, नहीं, यह अन्यजातियों को परिवर्तित करने के लिए है। और वह उनसे परिवर्तित होने का आह्वान कर रहा है।

जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। और आप यीशु का नाम पुकार रहे हैं। और फिर श्लोक 39 में, वह इसके अंत में कहता है, जितने तुम्हारे पुत्रों को हमारा परमेश्वर यहोवा बुलाएगा, और जितने दूर दूर हैं उन सभी को बुलाएगा।

खैर, यह जोएल के उद्घरण का अंत है। तो, बीच में वह मिड्रैश में जो कुछ भी कर रहा है, वह जोएल के उस पाठ को समझा रहा है, जो कोई भी प्रभु के नाम से पुकारेगा उसे बचाया जाएगा। और वह करता है, मेरा मानना है कि पॉल यहाँ भी वही काम कर रहा है।

यह प्रारंभिक ईसाइयों के बीच व्याख्या की परंपरा रही होगी। और ऐसा क्यों नहीं कि इसे पिन्तेकुस्त के दिन या उसके आसपास वापस जाना चाहिए। रोमियों अध्याय 10, श्लोक 14 से 17 तक।

श्लोक 14 और 15 में, उसके पास एक और सोराइट्स, एक और श्रृंखला है। उन्हें रोमन में ये बहुत पसंद हैं। रोमनों में ये अन्यत्र की तुलना में कहीं अधिक हैं।

लेकिन वह कहते हैं, ठीक है, हमें बचाए जाने के लिए प्रभु का नाम पुकारना होगा, पद 13। खैर, हम उस पर विश्वास किए बिना उसे कैसे पुकार सकते हैं? और जब तक हम उसके बारे में नहीं सुनेंगे, हम उस पर विश्वास कैसे कर सकते हैं? और जब तक उसका प्रचार न किया जाए हम उसके बारे में कैसे सुन सकते हैं? और जब तक उन्हें भेजा न जाए, कोई उपदेश कैसे दे सकता है? और यहां उन्होंने यह दिखाने के लिए एक धर्मग्रंथ का हवाला दिया कि वास्तव में, वे भेजे गए हैं। माफ कीजिए, पहाड़ों पर शुभ समाचार लाने वालों के पैर कितने सुंदर होते हैं।

यह यशायाह अध्याय 52 और श्लोक सात से है। यह एक नए पलायन की घोषणा करने का संदर्भ है कि भगवान ने जंगल में एक राजमार्ग बनाया है और अपने लोगों को सिथ्योन में वापस ला रहे हैं। और यह पुनर्स्थापना का समय है।

और यशायाह 52:7 विशेष रूप से मोक्ष की खुशखबरी, शांति की खुशखबरी, अच्छी खबर, हमारे भगवान शासन करता है, जो कि भगवान के राज्य की अच्छी खबर है, की बात करता है। और इसलिए, पॉल कह रहा है कि यह उपदेश दिया गया है। जब तक इसका प्रचार न किया जाए वे कैसे सुन सकते हैं? जब तक उन्हें भेजा नहीं जाएगा वे प्रचार कैसे कर सकते हैं? खैर, कुछ भेजे गए हैं और संदेश का प्रचार किया जा रहा है।

और, आप जानते हैं, पॉल स्वयं ऐसा कर रहा था। और अन्य भी ऐसे ही थे और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। लेकिन 10.16 में, वह बताते हैं, कि सुनने वाले सभी लोगों ने विश्वास नहीं किया।

विश्वास करने के लिए आपको संदेश सुनना होगा। और फिर, हमारा मतलब यह नहीं है, आप जानते हैं, यदि आप बहरे हैं, तो आपको बाहर रखा गया है, लेकिन आपको संदेश प्राप्त करना होगा। किसी को संदेश लाना होगा या उसे आप तक पहुंचाना होगा।

लेकिन सिर्फ इसलिए कि सुनना आपको विश्वास करने में सक्षम बनाता है इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई जो सुनता है वह विश्वास करता है। और इसलिए, वह यशायाह 53.1 को उद्धृत करता है। खैर, सुनने वाले सभी लोगों ने विश्वास नहीं किया क्योंकि जैसा कि यशायाह कहते हैं, किसने हमारी रिपोर्ट या हमारे संदेश पर विश्वास किया जिसके बारे में वह संदर्भ में बात कर रहा है। आप देख सकते हैं कि यशायाह 53.1 इसके तुरंत बाद यशायाह 52:7 के संदर्भ में है। पॉल इन ग्रंथों के संदर्भ के साथ-साथ, आप जानते हैं, विभिन्न अन्य यहूदी व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों के संदर्भ में सोच रहे हैं जो उनके समय में उपयोग किए गए थे।

और इसलिए, वह पद 17 पर आता है। विश्वास संदेश सुनने से आता है। यह स्वचालित नहीं है जैसा कि वह श्लोक 16 में दिखाता है, लेकिन विश्वास संदेश से आता है।

अब यह एक ऐसा पाठ है जिसे कभी-कभी संदर्भ से बाहर उद्धृत किया जाता है। विश्वास सुनने से आता है. तो, आपको चर्च जाना होगा और किसी को इसका प्रचार करते हुए सुनना होगा।

इसे पढ़ना या, आप जानते हैं, बाइबल को टेप या कुछ और पर सुनना पर्याप्त नहीं है। दरअसल, इसमें बात गायब है। बात सिर्फ इतनी है कि संदेश आप तक लाना है।

यदि आपके पास अनुवादित बाइबिल है, तो आप जानते हैं, आप इसे स्वयं पढ़ रहे हैं, और आपको अभी भी संदेश मिल रहा है। लेकिन इस संदर्भ में वह यहां जिस शब्द का उल्लेख कर रहे हैं वह विशेष रूप से सुसमाचार का संदेश और लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने का महत्व है। लेकिन वह यहां जिम्मेदारी का मुद्दा भी दिखा रहे हैं।

रोमनों का अध्याय एक, खैर, अन्यजातियों के पास सृष्टि के बारे में इतना ज्ञान था कि वे यह जानने के लिए जिम्मेदार थे कि मूर्तिपूजा गलत है। यह उन्हें सृष्टि का सुसमाचार नहीं देता है, बल्कि यह उन्हें यह जानने के लिए पर्याप्त ज्ञान देता है कि वे सृजित चीजों की पूजा करने के लिए जिम्मेदार हैं, जो स्पष्ट रूप से उनसे महान किसी चीज़ द्वारा डिज़ाइन की गई हैं। श्लोक 18 में वह कहता है, इस्राएल ने सुना है, और इसलिये इस्राएल उत्तरदायी है।

और वह श्लोक चार में भजन 19 को उद्धृत करके इसका समर्थन करते हैं, जहां उनकी आवाज पूरी दुनिया में पहुंच गई है। अच्छा, इसका क्या मतलब है? आप सोच सकते हैं कि इसका मतलब है, अच्छा समाचार चला गया है और सभी ने अच्छी खबर सुनी है। और आपके पास कुलुस्सियों में कुछ है जहां प्रतिनिधि रूप से सुसमाचार पूरी दुनिया में फैल रहा है।

लेकिन ये एक मुश्किल है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। लेकिन भजन 19 का संदर्भ, श्लोक एक से चार तक, यह सृष्टि का गवाह है, जैसा कि आपने रोमियों अध्याय एक में किया था।

शायद इसका तात्पर्य सार्वभौमिक जिम्मेदारी से है। इसका तात्पर्य हमारे पाप के लिए सार्वभौमिक जिम्मेदारी से है। हमें बेहतर जानना चाहिए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर किसी ने सुसमाचार, अच्छी खबर सुनी है।

ईश्वर की, शायद वह सृष्टि के साक्ष्य के सादृश्य द्वारा अपील कर रहा है, यह दर्शाता है कि जैसे ईश्वर चाहता था कि स्वयं को जाना जाए, और जैसा कि पहले रोमियों 9 में था, ईश्वर चाहता था कि इतिहास में उसके कृत्यों के माध्यम से फिरौन के माध्यम से स्वयं को जाना जाए, ईश्वर यही चाहता है सार्वभौमिक रूप से जाना जाना। या शायद वह कह रहा है, यदि यह अन्यजातियों को जिम्मेदार बनाता है क्योंकि उनके पास सृष्टि में यह संदेश है, तो इसराइल कितना अधिक है जिसके पास कानून है, वास्तव में, भजन 19 उस बारे में बात करता है, न केवल सृष्टि में भगवान का वचन, बल्कि अध्याय में भी 19, श्लोक सात से 11 तक, इसराइल के पास टोरा और धर्मग्रंथों में परमेश्वर का वचन है। किसी भी स्थिति में, श्लोक 19 से 21, अध्याय 10, श्लोक 19 में, पॉल व्यवस्थाविवरण 32:21 से उद्धरण देता है। और यह इस्राएल की चट्टान के रूप में परमेश्वर के संदर्भ से है, व्यवस्थाविवरण 32:15 और 18।

और सन्दर्भ व्यवस्थाविवरण 32 में भी है, परमेश्वर इस्राएल का न्याय कर रहा है, और परमेश्वर इस्राएल को ईर्ष्यालु बनाने के लिए अन्य लोगों का स्वागत करता है। जैसे पॉल आधारशिला पाठ

पर वापस आता है, जो कोई भी उस पर विश्वास करेगा उसे शर्म नहीं आएगी। पॉल रोमियों 11 में इस पर वापस आने वाला है।

पॉल अपने, ईश्वर द्वारा अपने लोगों को दूसरे राष्ट्र के माध्यम से ईर्ष्यालु बनाने के बारे में विस्तार से बताने जा रहा है जो ईश्वर के लोग नहीं हैं। इसलिए, परमेश्वर अपने लोगों को ईर्ष्यालु बनाने के लिए अन्य लोगों का स्वागत कर रहा है। अतः यह पाठ महत्वपूर्ण होगा।

पॉल यशायाह अध्याय 65, श्लोक एक और दो, या यशायाह 65, एक और दो के कुछ हिस्सों को उद्धृत करने के लिए श्लोक 20 और 21 में आगे बढ़ता है, जहां भगवान कहते हैं, मैं उन लोगों द्वारा पाया जाऊंगा जिन्होंने मुझे नहीं खोजा। और वास्तव में, पॉल निस्संदेह जानता है कि यह कैसे चलता है। कुछ ऐसा जो आवश्यक रूप से उनके उद्धरण में नहीं है, लेकिन यशायाह 65.1 में है, एक ऐसा राष्ट्र जिसने मुझे नहीं बुलाया।

खैर, वह भगवान का नाम लेने की बात कर रहा है। तो अब, चाहे यशायाह के संदर्भ में, यह इज़राइल के बारे में बात हो रही है जिसने उसे नहीं बुलाया और इसलिए अब वे उसकी ओर लौट रहे हैं, या क्या यह अन्यजातियों के बारे में बात कर रहा है। और संदर्भ में कुछ मिसालें हैं, यशायाह 56 और आसपास के कुछ अन्य अंश जहां भगवान खुद को अन्यजातियों के लिए भी प्रकट कर रहे हैं।

लेकिन वह यशायाह 65 और पद दो के उद्धरणों में आगे बढ़ता है, जो इज़राइल की अवज्ञा के बारे में बात करता है। तो, यह सब अध्याय 11 में ले जाता है। ऐसा न हो कि आप यह सोचें कि क्योंकि पॉल इतनी कड़ी बहस कर रहा है, इसलिए अन्यजातियों का भगवान के लोगों में स्वागत है, ऐसा न हो कि आप यह सोचें कि इसका मतलब है कि भगवान को अब यहूदी लोगों की परवाह नहीं है।

अध्याय 11 में, वह वापस आता है और यहूदी लोगों के लिए ईश्वर की निरंतर योजना के बारे में बात करता है। आप जानते हैं, पॉल के दिनों में, उन्हें अन्यजातियों को शामिल करने के बारे में बहस करने का एक बड़ा मुद्दा उठाना पड़ा था। क्योंकि यदि आप पुराना नियम पढ़ते हैं, जिसे हम पुराना नियम कहते हैं, तो यह मुख्य रूप से लागू होता है, मुख्य रूप से इज़राइल को संबोधित होता है।

और तो यह परिवर्तन कहां हुआ? इसलिए, पॉल को इसे और अधिक विस्तार से बताना होगा। अब, जब मैंने कहा कि जिसे हम पुराना नियम कहते हैं, जिसे हम नया नियम कहते हैं, वह धर्मग्रंथ जो यीशु के आने से पहले दिया गया था, तकनीकी रूप से एक वसीयतनामा नहीं है। इसमें अनुबंध का रिकार्ड शामिल है।

लेकिन, आप जानते हैं, उदाहरण के लिए, डेविड वगैरह के बारे में कहानियाँ, वह वाचा नहीं है जो भगवान ने अपने लोगों इज़राइल के साथ बनाई थी। और नया नियम, जिसे हम नया नियम कहते हैं, मेरे पास उनके लिए कोई बेहतर शब्द नहीं है, लेकिन सिर्फ नए नियम की ओर इशारा करने के लिए, जिसे हम नया नियम कहते हैं, वह स्वयं एक वाचा नहीं है। यह वाचा की रिपोर्ट करता है।

लेकिन यीशु के आने से पहले का धर्मग्रंथ और यीशु के आने के बाद का धर्मग्रंथ कहना थोड़ा बोझिल है। और केवल बोधगम्यता के लिए, मैं केवल सामान्य नामकरण का उपयोग करता हूँ। लेकिन रोमियों अध्याय 11, यहूदी लोगों के लिए परमेश्वर की सतत योजना।

पॉल यह सुनिश्चित करना चाहता है कि लोग उसकी बातों का गलत इस्तेमाल न करें। इसलिए, ऐसा न हो कि हम सोचें कि वह केवल रोमियों 11 में यहूदी ईसाइयों को व्याख्यान दे रहा है, वह गैर-यहूदी ईसाइयों को चुनौती देना शुरू कर देता है। और वे वास्तव में चर्च के बहुमत थे।

तो, यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होने वाला है। उनका कहना है कि ईश्वर के पास अभी भी इज़राइल में अवशेष हैं, और उनके यहूदी लोगों को उनकी ओर आकर्षित करने के लिए अभी भी उनके पास एक योजना है। और वास्तव में, आप अन्यजाति वैसे भी हमारे यहूदी विश्वास और विरासत में परिवर्तित हो गए हैं।

तुम्हें हमारे पेड़ में रोपा गया। आप तैयार हो चुके हैं और आप अंदर हैं। लेकिन इसकी शुरुआत हमारे पेड़ से हुई थी।

और हमारे लिए आपके लिए शुरू में ही तैयार किए जाने की तुलना में वापस शामिल होना और भी आसान है। इसलिए, पॉल अन्यजातियों को अंतिम समय में इकट्ठा करने की पहल करके इसराइल को ईर्ष्या के लिए उकसाना चाहता है। इस ईर्ष्या को फिर यहूदी लोगों को अंदर लाना चाहिए।

तो, आपके पास यहूदी लोगों को बचाया जा रहा है, अन्यजातियों को बचाया जा रहा है, यहूदी लोगों को बचाया जा रहा है। और जब पॉल अवशेष के बारे में बात करता है, तो उसका मतलब यह नहीं है कि इसका मतलब केवल मुट्ठी भर यहूदी लोगों की तरह हो सकता है। अवशेष का उपयोग समग्र रूप से इज़राइल के विपरीत किया जाता है।

परमेश्वर की वाचा ने उन व्यक्तिगत यहूदी व्यक्तियों को कभी नहीं बचाया जिन्होंने वाचा का पालन नहीं किया। पुराने नियम में यह कभी सत्य नहीं था। पुराने नियम में भी, अन्यजाति समय-समय पर वाचा में शामिल हुए थे, और परमेश्वर के लोगों में शामिल हुए थे।

राहाब इसराइल का हिस्सा बन गया। हमने जोशुआ की किताब में पढ़ा। रूथ इसराइल का हिस्सा बन गया।

संभवतः दाऊद के अंगरक्षक, करेतियों और पलेतियों, वे पलिशती प्रतीत होते हैं। हित्ती ऊरिय्याह संभवतः परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बन गया। तो, हमारे पास पुराने नियम में बहुत से लोग हैं।

जाहिर है, यह एक छोटी संख्या है। परन्तु जंगल की पीढ़ी के बारे में सोचो, जहाँ यहोशू और कालेब वफादार थे। लेकिन अधिकांश पीढ़ी तब नहीं थी जब वे पहली बार जंगल में गए थे।

और इसलिए उस पीढ़ी के भीतर एक ऐसा अवशेष है जो वास्तव में भगवान की सेवा कर रहा है। मुझे लगता है कि जैसे-जैसे समय बीतता गया, कुछ अन्य लोगों ने भी सबक सीख लिया। लेकिन किसी बिंदु पर, आपके पास वास्तव में बहुत छोटा अवशेष था।

यहोशू की पीढ़ी के लोग देश में आ रहे हैं, देखो, ये लोग परमेश्वर के लिये जोशीले हैं। खैर, अब बचे हुए लोग संभवतः इज़राइल की संपूर्ण जातीय जनता के काफी करीब हैं। वे वाचा में चल रहे हैं।

लेकिन आपके पास वहां भी अपवाद हैं, जैसे अचन। आकान ने अपने लोगों को धोखा दिया। वह लूट को अपने तंबू के नीचे छिपाता है।

उसके परिवार को इसके बारे में पता है। और इस प्रकार, उसके साथ उसका परिवार भी नष्ट हो जाता है। और वहां राहब के साथ जानबूझकर विरोधाभास किया गया है, जो अपने लोगों को धोखा देती है लेकिन परमेश्वर की वाचा में आती है।

और वह जासूसों को अपनी छत पर छिपाती है, इसके विपरीत आकान अपने तंबू के नीचे लूट छुपाता है। और उसके परिवार को इसके बारे में पता है। और इससे उसके पूरे परिवार का उद्धार हो जाता है।

तो, ये चीज़ें आपके पास पहले से ही पुराने नियम में हैं। लेकिन कभी-कभी आपके भविष्यवक्ताओं में जो बात होती है वह इस बात की भविष्यवाणी होती है कि यह और भी अधिक फैल रही है। और इसलिए कभी-कभी आपके पास जो कुछ है, निश्चित रूप से पहली शताब्दी में, यहां आपके पास वे लोग हैं जो जातीय रूप से इज़राइल हैं, लेकिन उसके भीतर, आपके पास अवशेष हैं, चाहे वह किसी भी आकार का हो।

इसके अलावा, आपके पास ये अन्यजाति हैं जो जातीय रूप से इज़राइल का हिस्सा नहीं थे, लेकिन यह मोक्ष के संबंध में भगवान की वाचा का हिस्सा बन गया। तो, आपके पास अतिव्यापी वृत्त या दीर्घवृत्त हैं, हालाँकि, आप इसे रखना चाहते हैं। परमेश्वर की वाचा ने व्यक्तिगत यहूदी लोगों को कभी नहीं बचाया था।

यह एक कॉर्पोरेट वाचा थी, लेकिन भगवान ने मुक्ति का मार्ग भी बताया। और अन्यजातियों का भी स्वागत किया गया। जो विदेशी इस देश में हैं वह पेंटाटेच में इसके बारे में बात करता है।

हालाँकि, परमेश्वर के वादे ने कुछ अन्य मामलों में इस्राएल के लोगों के लिए अनुग्रह प्रदान किया। रोमियों के अध्याय तीन, श्लोक दो, अध्याय नौ, श्लोक चार और पांच में, हम पहले ही देख चुके हैं कि, इसमें ईश्वर की निरंतरता भी शामिल है जो उन तक पहुंचता है और उन्हें बुलाता है। अधिक विस्तार से देखते हुए, रोमियों 11, एक से पाँच तक, एक अवशेष के बारे में बोलते हुए, पॉल खुद को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

मैं एक इस्राएली हूँ. मैं बिन्यामीन हूँ, बिन्यामीन के गोत्र से। यह अधिनियमों में हमारे पास जो कुछ है, उसके अनुरूप है, जहां यह उसका यहूदी नाम शाऊल देता है, जो एक प्रसिद्ध बेंजामिन राजा था।

हमारे पास भी है, पॉल खुद को एक उदाहरण के रूप में देता है। फिर वह राष्ट्रीय धर्मत्याग की अवधि के दौरान एलियाह के विरोध में जाता है जब अधिकांश इज़राइल, उत्तरी राज्य, भगवान से दूर हो गए थे। और एलियाह विरोध करता है, हे परमेश्वर, वे नहीं हैं, मैं ने ही यहोवा के भविष्यद्वक्ता को छोड़ दिया है।

यह वह समय भी था जब एलियाह काफी निराश था। स्वर्ग से आग उतरी थी और इज़ेबेल ने फिर भी पश्चाताप नहीं किया और वास्तव में कहा कि वह उसे मारने जा रही थी। तो, एलियाह काफी निराश है।

मैंने ही प्रभु के नबी को छोड़ दिया है। उसे बेहतर पता होना चाहिए था। ओबद्याह ने उस से पहले ही कह दिया था, कि मैं ने गुफा में पचास के दशक के सौ भविष्यद्वक्ताओं को छिपा रखा है।

तुम्हें पता है, तुम अकेले नहीं हो। लेकिन एलियाह को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह अकेला था। बाद में रब्बियों ने इसे देखा और उन्होंने कहा, एलियाह ने यह बहुत बुरा किया क्योंकि वह परमेश्वर के लोगों पर दोष लगा रहा था।

लेकिन पॉल इसे बिल्कुल अलग दिशा में ले जाता है। एलिजा ने इसका विरोध किया, मैं अकेला ही चला गया हूँ। और परमेश्वर ने उत्तर दिया, इस्राएल में 7,000 ऐसे हैं जिन्होंने बाल के सामने घुटने नहीं टेके।

दूसरे शब्दों में, इज़राइल के भीतर एक अवशेष है। ऐसे लोग हैं जो झूठे, झूठे ईश्वर, झूठे देवी-देवताओं और सच्चे ईश्वर की सेवा करने वालों की ओर नहीं मुड़े हैं। और उसी तरह, पॉल कहते हैं, अभी भी एक वर्तमान अवशेष है, पद पाँच।

और फिर, अवशेष से उसका तात्पर्य समस्त इस्राएल से भिन्न कुछ है। दरअसल, उनके राज्य में यहूदी विश्वासियों का प्रतिशत संभवतः तीसरी या चौथी शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक के अधिकांश इतिहास के प्रतिशत से अधिक था। अब हमारे पास यीशु में विश्वास करने वाले यहूदियों की संख्या बढ़ रही है।

लेकिन पॉल के पास शेष लोगों पर जोर देने का एक कारण था, यह नहीं कि भगवान अब किसी भी यहूदी लोगों को नहीं बचा रहे हैं, बल्कि यह कि यह अभी तक पूरे इज़राइल को नहीं बचा रहा है। लेकिन तथ्य यह है कि कुछ ऐसे भी हैं जो बचाए गए हैं, भगवान ने अपने लोगों को अस्वीकार नहीं किया है। अध्याय 11, श्लोक आठ से 10, अंशों का सम्मिश्रण, श्लोक आठ, जो प्राचीन यहूदी अभ्यास में आम था।

तो, वह यहां कुछ चीजों का मिश्रण करने जा रहा है। स्तब्धता की भावना यशायाह 29 और श्लोक 10 के यूनानी अनुवाद से आती है। वे नहीं समझते, उनमें स्तब्धता की भावना है।

और साथ ही, वह व्यवस्थाविवरण 29, श्लोक चार से भाषा का उपयोग करने जा रहा है। भगवान ने तुम्हें आज तक देखने के लिए आंखें और सुनने के लिए कान नहीं दिए हैं। फिर वह आगे बढ़ेगा और दूसरे पाठ को एक साथ जोड़ देगा।

उसने अभी इस बारे में बात की है कि आपके पास देखने के लिए आंखें या सुनने के लिए कान नहीं हैं। अध्याय 11, श्लोक नौ से 10, वह भजन 69, श्लोक 22 और 23 से उद्धृत करने जा रहा है, जो देखने में सक्षम न होने के बारे में भी बात करता है। फिर से छोड़कर, वह थोड़ा सा पाठ मिश्रित करने जा रहा है।

जाल शब्द भजन 34 और श्लोक आठ से है, जिसमें फंदा शब्द भी है और इसलिए पॉल इसे जोड़ सकता है। पॉल बस, शास्त्र को आगे-पीछे जानता है। अब, कभी-कभी जब वे इस तरह से ग्रंथों का मिश्रण करते थे, तो यह उनकी स्मृति से गलती से मुद्रास्फीति थी, लेकिन वे कहते हैं, ठीक है, हम अभी भी धर्मग्रंथ उद्धृत कर रहे हैं।

लेकिन कभी-कभी उन्होंने पूरे अनुच्छेद को उजागर करने के लिए जानबूझकर ऐसा किया। खैर, पॉल यहाँ क्या कर रहा है? मुझे लगता है कि वह भजन 69 के पूरे अंश को उद्धृत करने का इरादा रखता है, क्योंकि यह भजन 22 की तरह, धर्मी लोगों के कष्ट भोगने वाले भजनों में से एक है। धर्मी कष्ट भोगने वाले भजन की प्रार्थना कोई भी व्यक्ति कर सकता है जो अन्यायपूर्ण ढंग से कष्ट सह रहा हो।

उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। वे दोषसिद्धि के लिए ईश्वर को पुकार रहे हैं, लेकिन यह पीड़ितों में सबसे धर्मी, यीशु पर भी सर्वोत्कृष्टता से लागू होता है। और वास्तव में, ईश्वर की व्यवस्था में, कुछ विवरण यीशु पर बहुत अच्छी तरह से फिट बैठते हैं।

लेकिन वह, पॉल को इसके बारे में पता होना चाहिए क्योंकि वह वास्तव में अध्याय 15 में श्लोक तीन में भजन 69 को फिर से उद्धृत करता है, जब वह इसे फिर से यीशु पर लागू करने जा रहा है क्योंकि धर्मी उत्कृष्टता का सामना करते हैं। रोमियों अध्याय 11, श्लोक 11 और 14 में वह इस्राएल को ईर्ष्या के लिए उकसाने से संबंधित है। यह रोमियों 10:19 में व्यवस्थाविवरण 32:21 से उनके उद्धरण को याद दिलाता है, मैं तुम्हें दूसरे राष्ट्र से ईर्ष्या करवाऊंगा।

ठीक है, अन्यजातियों के लिए पॉल के मंत्रालय का एक कारण यह कहने जैसा नहीं है, ठीक है, यही एकमात्र कारण है कि मुझे आप अन्यजातियों की परवाह है, लेकिन वह पद 13 में अन्यजातियों को संबोधित कर रहा है। एक कारण यह है कि वह अन्यजातियों और अपने मंत्रालय की परवाह करता है उनके लिए श्लोक 14 में है और अन्यजातियों के लिए एक प्रेरित है। उनके माध्यम से वह अपने लोगों को ईर्ष्या के लिए उकसाता था।

इस शब्द का अर्थ उत्साह भी हो सकता है। जबकि पहले, पॉल ने उनके बारे में ज्ञान के बिना उत्साह होने की बात कही थी, लेकिन यह एक अच्छा उत्साह, एक अच्छी ईर्ष्या होने जा रही है। भविष्यवक्ताओं ने अन्यजातियों की अंतिम सभा का वादा किया था।

खैर, अब वह यीशु के माध्यम से पूरा हो रहा है। तो, यह कुछ ऐसा होना चाहिए जहां यहूदी लोग चारों ओर देखें और कहें, वाह, भविष्यवाणी सच हो रही है, और देखो, ये लोग इज़राइल के भगवान के अनुयायी बन रहे हैं। और यह यीशु के माध्यम से है।

वह एक और अधिक विशिष्ट बिंदु बना सकता है कि वह यह भी कह सकता है, ठीक है, देखो, ये अन्यजाति, उनमें से कुछ भगवान के लिए उससे भी अधिक उत्साही हैं जितना कि हम अपने भगवान के लिए हैं। और इसलिए, इससे उन्हें ईर्ष्या हो सकती है। पॉल का मानना था कि अपने मंत्रालय के माध्यम से, और आप जानते हैं, यदि समय चलता रहा, तो ठीक है, समय चलता रहेगा, लेकिन यदि दूसरे आगमन से पहले का इतिहास चलता रहा, तो हम इसे इस तरह से रख सकते हैं।

यदि इतिहास पॉल के पीछे चलता रहा, तो ठीक है, फिर भी, इन अन्यजातियों को इकट्ठा किया जा रहा है और लोग अन्यजातियों तक पहुंच रहे हैं और वे इज़राइल के भगवान की ओर मुड़ रहे हैं। निश्चित रूप से यहूदी लोगों को देखना चाहिए, वाह, हमारे परमेश्वर की पूजा करने वाले अब हम लोगों की तुलना में अधिक लोग हैं जो गैर-यहूदी हैं। और यह यीशु के माध्यम से है जो एक यहूदी पैगंबर था और शायद, आप जानते हैं, यह ईश्वर की ओर से है।

और फिर वे यीशु पर विश्वास करने लगेंगे। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। ऐसा क्यों नहीं हुआ? क्योंकि पौलुस ने इस अध्याय में अन्यजाति ईसाइयों से जो कहा, उसका भी अन्यजाति ईसाइयों ने पालन नहीं किया।

पॉल ने अन्यजाति ईसाइयों को प्राकृतिक शाखाओं के खिलाफ घमंड करने के खिलाफ चेतावनी दी। और अन्यजाति ईसाइयों ने बाद में क्या किया? उन्होंने इस बारे में बात की कि कैसे गैर-यहूदी चर्च के रूप में हमने इज़राइल का स्थान ले लिया है और इज़राइल शापित है, इज़राइल न्याय के अधीन है। और ऐसा नहीं है कि ईश्वर न्याय नहीं करता, जिसमें इज़राइल का न्याय करना भी शामिल है, पुराने नियम में हुआ, नए नियम में हुआ, वर्ष 70 में हुआ।

लेकिन यह कहते हुए कि हमने उन्हें बदल दिया और उनकी परवाह कौन करता है? यह एक शापित लोग हैं। अब, अधिकांश लोग आज ऐसा नहीं कहेंगे, लेकिन चर्च के अधिकांश इतिहास में, वास्तव में, यही हुआ है। तो अंततः धर्माधिकरण के दौरान आपके द्वारा किए गए नरसंहार में, आपने यहूदी लोगों को कभी-कभी बपतिस्मा दिया था और पानी के अंदर तब तक रखा था जब तक कि वे डूब न जाएं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे मसीह की स्वीकारोक्ति को नहीं दोहरा सकें।

आपके यहां यहूदी लोगों को क्रूस पर जलाया जा रहा था, बहुत ही भयानक चीजें। अब आपके पास निःसंदेह मसीह के नाम पर भी इसके विरुद्ध बोलने वाले लोग थे। लेकिन यहूदी लोगों के खिलाफ ईसा मसीह के नाम पर इतने सारे अत्याचारों का इतिहास था कि यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यहूदी लोगों ने ऐसा नहीं किया।

लेकिन पॉल ने जो आशा व्यक्त की वह कोई सशर्त आशा नहीं थी, शायद इस संदर्भ में कि यह किस पीढ़ी में आती है, लेकिन पॉल का मानना था कि एक मोड़ आएगा, कि वे कुछ अलग देखेंगे। और आज हमारे पास यह दिखाने का अवसर भी है कि हम इब्राहीम, इसहाक और याकूब के एक सच्चे ईश्वर, पैगम्बरों के ईश्वर की पूजा करते हैं और हम यहूदी लोगों या किसी भी व्यक्ति के प्रति बुरा व्यवहार नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम हर किसी तक पहुंच कर हम टोरा की भावना को पूरा कर रहे हैं। और हम इस तरह से भगवान के लिए जी रहे हैं जो वास्तव में लोगों को ईर्ष्या के लिए उकसाएगा, जो लोग सही काम करना चाहते हैं और हमारे जीवन में भगवान की शक्ति को काम करते देखना चाहते हैं।

खैर, वह उन लोगों के बारे में बात करता है जिन्हें रोपा गया है। रोपे जाने का क्या मतलब है? कभी-कभी पेड़ के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आप एक पेड़ से दूसरे पेड़ में कलम लगाएंगे। आप किसी पालतू पेड़ पर जंगली जैतून का अंकुर लगा सकते हैं।

इस बीच, जो शाखाएँ उत्पादन नहीं कर रही थीं, आप उन्हें काट सकते हैं। नए ग्राफ्ट को प्रकृति के विपरीत कहा गया था, और इसी तरह से पॉल यहां इसके बारे में बात करते हैं। खैर, यहूदी लोग अक्सर अपने लोगों की तुलना जैतून के पेड़ से करते थे।

वास्तव में, रोम में एक आराधनालय था जिसका नाम जैतून के पेड़ जैसा था, हालाँकि हम नहीं जानते कि यह वास्तव में किस शताब्दी का है। वह गैर-यहूदी विश्वासियों के बारे में बात करता है, जिन्हें इसमें शामिल किया जा रहा है। हम आध्यात्मिक धर्म अपनाने वालों की तरह हैं।

हम इब्राहीम के बच्चे बन जाते हैं। हम परमेश्वर की मुक्ति की वाचा का हिस्सा बन जाते हैं। लेकिन वह कहते हैं, टूटी हुई शाखाओं को नीची दृष्टि से मत देखो।

पॉल को अंतर्ज्ञान हो सकता है, या पॉल ने अनुमान लगाया होगा कि रोम में यह चर्च जो 49 से 54 तक बड़े पैमाने पर गैर-यहूदी चर्च रहा है, पहले से ही यह कहने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, ठीक है, हम यहूदी तत्व के बिना ऐसा कर सकते हैं। और वास्तव में नाज़ियों ने यही करने की कोशिश की थी। वे वास्तव में पुराने आर्य देवताओं की पूजा करते थे।

मेरा मतलब है, उच्च-स्तरीय नाज़ी, वे ईसाइयों के रूप में ऐसा नहीं कर रहे थे। लेकिन वे राज्य चर्च पर कब्ज़ा करना चाहते थे। और सबसे पहले यहूदी ईसाइयों को बाहर निकाला गया।

और जिस किसी ने भी चर्च की यहूदीता या चर्च के पुराने नियम की विरासत आदि के बारे में बात करने की कोशिश की, वह इस तरह से बहुत ही मार्कियोनाइट था। उन्होंने रीच चर्च के बारे में बात की ताकि यीशु एक अन्यजाति हो इत्यादि। ऐसा कहने वाले लोग भी थे।

नाज़ी धर्मशास्त्रियों में से एक ने तर्क दिया कि, ठीक है, अन्यजातियों की गलील, यह सब अन्यजाति था। उन्हें यहूदी धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया है। बेशक, पुरातत्व हमें दिखाता है कि इस बिंदु पर यहूदी लोग बस गए थे और गलील को फिर से बसाया था।

लेकिन वे यहूदी धर्म को खत्म करने के लिए बहुत सी चीज़ें लेकर आए। और हमें सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि बाइबिल के कुछ विद्वानों में अभी भी उस विरासत का कुछ हिस्सा, यहूदी-विरोधी विरासत मौजूद है। अब, आप जानते हैं, मुझे ग्रीक और रोमन पृष्ठभूमि पसंद है, लेकिन आप यहूदी पृष्ठभूमि को भी बाहर नहीं कर सकते।

और निश्चित रूप से, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, क्योंकि नए नियम के बारे में धर्मशास्त्रीय दृष्टि से यह बिल्कुल सही है। तो, श्लोक 25 और 26 में, आप यहूदी लोगों को ईश्वर की ओर मुड़ते हुए देखेंगे। हम यहां पढ़ते हैं कि ऐसा तब होता है जब अन्यजातियों की परिपूर्णता आ जाती है।

दूसरे शब्दों में, जब राज्य का शुभ समाचार सब राष्ट्रों में फैल जाएगा, तब अंत आ जाएगा। अधिनियम 3 यहूदी लोगों के पश्चाताप करने पर मुड़ने के बारे में बात करता है। रोमियों 11 में, यह कुछ वैसा ही प्रतीत होता है जैसा हमारे पास अधिनियमों में है जहां जब यहूदी लोगों ने पश्चाताप नहीं किया है, तो यह अन्यजातियों के पास जाने का बहाना देता है।

अधिनियम 13, अधिनियम 18, अधिनियम 28. इसी तरह रोमियों अध्याय 11 में, पॉल अंत के समय यहूदी लोगों के बदल जाने की उम्मीद करता है। और भगवान की योजना में, उसने इसे पहले नहीं होने दिया ताकि अन्यजातियों को इकट्ठा होने के लिए अधिक समय मिल सके।

लेकिन यहूदी लोगों का यह बदलाव भविष्यवक्ताओं की एक अपेक्षा है। कुछ लोग इसकी व्याख्या यहां अध्याय 11 और श्लोक 26 में करते हैं। कुछ विद्वानों ने व्याख्या की कि परिवर्तित अन्यजातियों से उनका मतलब संपूर्ण इज़राइल से है, या परिवर्तित अन्यजातियों और यहूदी अवशेषों से है।

और जबकि मेरा मानना है कि आपके पास, जाहिर है, बहुत सारे परिवर्तित गैर-यहूदी होंगे, इसका मतलब इससे कम नहीं हो सकता है जब वह अन्यजातियों की पूर्णता के बारे में बात कर रहा है। यह अवशेष से कुछ अधिक है। यह उन सभी अन्यजातियों की तरह है, जिन तक हम संभवतः तब पहुंच सकते हैं जब सभी राष्ट्रों के बीच अच्छी खबर का प्रचार किया जाता है।

लेकिन संदर्भ में, रोमियों 11 में हर जगह, जब वह इज़राइल के बारे में बात कर रहा है, तो वह यहूदी लोगों के बारे में बात कर रहा है। जब वह मुक्ति के बारे में बात कर रहा है, तो संभवतः वह इस बारे में भी बात कर रहा है कि रोमनों में उसका अन्यत्र क्या मतलब है। तो यह मसीह में विश्वास के माध्यम से आया।

और इसलिए, वह मसीह में विश्वास की ओर मुड़ने की उम्मीद कर रहा है। अब, इसका सटीक विवरण, क्या यह उसके वापस आने से ठीक पहले होता है? या कुछ लोग सोचते हैं कि यह उसके वापस आने के बाद है। लेकिन ऐसा लगता है, ठीक है, मेरी राय में, ऐसा लगता है कि जब अन्यजातियों की परिपूर्णता आ गई है, तो आप यहूदी लोगों को मसीहा में विश्वास करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

विश्वास की ओर मुड़ना और ईश्वर की ओर मुड़ना पूर्णता के लिए एक शर्त थी, कभी-कभी भविष्यवक्ताओं में, अधिनियमों में, और मेरा सुझाव है कि यह यहाँ भी हो सकता है। लेकिन मैं

कुछ भी कहता हूँ, लगभग कोई न कोई अलग दृष्टिकोण रखता है। इसलिए, मैं अन्य विचारों के प्रति कृतघ्न होने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा हूँ, और यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ कि मुझे लगता है कि यह एक साथ कैसे फिट बैठता है।

लेकिन किसी भी मामले में, पूरा इज़राइल शेष के साथ विरोधाभास रखता है। क्या इसका तात्पर्य प्रत्येक यहूदी व्यक्ति से है जो उस समय जीवित था? वास्तव में जरूरी नहीं है। मिश्राह और हेड्रोन, 10:1, पूरे इस्राएल को बचाए जाने के बारे में बात करता है और फिर यह स्पष्ट करता है कि सद्कियों सहित इस कारण या उस कारण से कौन से इस्राएलियों को बचाया नहीं जा सकेगा, क्योंकि वे पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे मृत।

तो, इसका मतलब समग्र रूप से इज़राइल है, हालाँकि, समग्र रूप से यहूदी लोग। और यह यशायाह 59, श्लोक 20 और 21 के शब्दों को अनुकूलित करता है, जहाँ वह उनके साथ मेरी वाचा की बात करता है। खैर, वास्तव में, कुछ भाषा, उनके साथ मेरी वाचा, यशायाह 27.9 या ईजेकील 36.26 में एक पुनर्स्थापना संदर्भ से आती है। लेकिन अधिकांश भाषा यशायाह 59 से है।

जब वह सिथ्योन से आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में बात करता है, तो यह सुझाव दिया जा सकता है कि, ऐसे कारण हैं कि इस पर बहस होती है कि क्या यह पहले आता है या आलंकारिक या शाब्दिक या जो भी हो। लेकिन मुझे लगता है कि यह यहूदी लोगों के समग्र रूप से बदलने की बात कर रहा है। अध्याय 11 में, छंद 30 से 32 तक, खंड के अंत में एक खंड के विषयों को संक्षेप में प्रस्तुत करना आम बात थी।

और यहाँ, इज़राइल और अन्यजातियाँ अवज्ञा के नियमों का आदान-प्रदान करते प्रतीत होते हैं, जैसा कि आपने अध्याय 9:25 और 26 में बताया था। अब, मैं इस बिंदु पर स्तुतिगान, अध्याय 11, छंद 33 से 36 के साथ समाप्त नहीं करने जा रहा हूँ, भले ही यह 9 से 11 तक समाप्त होता है। यह इतिहास में भगवान की संप्रभुता का जश्न मना रहा है और कैसे, जैसे भगवान ने उत्कृष्ट रूप से रचना की है, और हमारे जीवन को उत्कृष्टता से डिज़ाइन किया है, भगवान ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इतिहास को उत्कृष्टता से डिज़ाइन किया है।

भले ही ये लोग अवज्ञा करते हैं और ये लोग अवज्ञा करते हैं, भगवान अंततः अपने उद्देश्यों को पूरा करने जा रहे हैं और कुछ भी इसे रोक नहीं पाएगा। महान स्तुतिगान, लेकिन यह रोमनों के अगले भाग, अध्याय 12 से लेकर उपदेशों के अंत तक के लिए भी मंच तैयार करता है। इस वजह से, मैं वहाँ उस स्तुतिगान को और अधिक विस्तार से सहेजने जा रहा हूँ, ताकि आप देख सकें कि कैसे, भले ही यह वास्तव में इस खंड का हिस्सा है, यह आपको अगले खंड के लिए भी तैयार करता है।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 9:17-11:32 पर सत्र 11 है।